साझी समझ और साझे प्रयास

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फोल्ड, विकासखण्ड डुण्डा

– मनोरमा

विद्यालय के प्रति समुदाय का अपनापन और शिक्षकों का पूर्ण समर्पण मिलकर विद्यालय की हर चुनौती को आसान बना देते हैं।

किसी भी सामाजिक संस्थान को बनाने में समुदाय, उसमें काम करने वाले व्यक्ति और उसके लाभार्थियों का विशेष योगदान होता है। इन तीनों स्तम्भों की ही बदौलत कोई संस्थान प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। विद्यालय को भी एक सामाजिक संगठन के रूप में देखा जाता है जो कि तीन स्तम्भों, विद्यार्थी, अध्यापक एवं अभिभावक पर टिका होता है। इन तीनों ही स्तंभों का विद्यालय की प्रगति में बेहद महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसीलिए राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005 और RTE ACT 2009 द्वारा SMC को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। हम दिन प्रतिदिन विद्यालयों से जुड़ी कई खबरें अखबारों में पढ़ते हैं। कहीं अभिभावकों के सहयोग से कुछ नया हो रहा होता है, तो कहीं अध्यापकों के अच्छे प्रयासों के बल पर, और कई बार अधिकांश विद्यालय अपने विद्यार्थियों के कारण भी सुर्खियों में बने रहते हैं। उत्तरकाशी जिले के डुंडा विकासखण्ड में संकुल भटवाड़ी के अंतर्गत आने वाला उच्च प्राथमिक विद्यालय फोल्ड ने इन तीनों स्तंभों की मजबूती के चलते अपने नाम को पूरे जनपद में ऊंचा किया है। हम हमेशा यह कहते हैं कि ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती। लेकिन विद्यालय के सन्दर्भ में जब तक तीनों स्तंभों का समन्वय नहीं होगा, तब तक उसकी परिकल्पना सही मायने में साकार नहीं हो सकती है। यहां के विद्यार्थी, अध्यापक और अभिभावक तीनों ही स्तम्भ बराबर का साथ निभाकर, इस विद्यालय को निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर किये हुए हैं। जहां एक ओर अभिभावक इस विद्यालय को उत्तरकाशी बाजार के नामी निजी स्कूल के परस्पर मानते हैं वहीं दूसरी ओर अध्यापक भी निरंतर अपने परिश्रम के बल पर अभिभावकों के विश्वास को और अधिक मजबूती प्रदान कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप यहां के विद्यार्थी न केवल जनपदीय अपितु राज्य स्तरीय कार्यक्रमों में भी अच्छा प्रदर्शन कर दोनों के विश्वासों को मजबूती प्रदान कर रहे हैं।

यह विद्यालय अपने शिक्षकों के कठिन परिश्रम और कर्मठता के लिए पूरे विकासखंड में माना जाता है। इनके प्रयासों से ही पूरे विकासखण्ड में यह सबसे अधिक नामांकन (69 विद्यार्थी) वाला विद्यालय बना हुआ है। इस विद्यालय में कार्यरत तीनों शिक्षक इसी अकादमिक सत्र से विद्यालय में नियुक्त हुए हैं। इससे पहले यह विद्यालय व्यवस्था पर कार्यरत दो शिक्षकों के सहारे ही चल रहा था। इन तीन शिक्षकों में से अरविन्द थपलियाल जी पहले भी इस विद्यालय में व्यवस्था पर अपनी सेवा दे चुके हैं। इस वर्ष स्थायी रूप से वे इस विद्यालय में नियुक्त हुए हैं। इन तीनों शिक्षकों के आने से जो बदलाव की लहर विद्यालय में दौड़ी है वह सभी के लिए प्रेरणादायी है। डुंडा विकासखण्ड के शिक्षा विभाग के अधिकारी तो इस विद्यालय की प्रशंसा करते ही हैं। ब्लॉक के अन्य शिक्षकगण भी इस बात से इत्तेफाक रखते हैं कि यह विद्यालय अपने शिक्षकों की मेहनत और बच्चों की दक्षता स्तर के कारण यहां के श्रेष्ठ विद्यालयों की श्रेणी में आ गया है।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फोल्ड ब्लॉक मुख्यालय डुंडा से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर है। यह विद्यालय तीन गांव संताण, मांझे और बमण गांव के बीच राज्यमार्ग से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इन तीनों गांव की कुल जनसंख्या लगभग 1500 है। गांव के लोग अपनी आजीविका व जीवन निर्वहन हेतु पूरी तरह खेती व मजदूरी पर ही निर्भर हैं। शिक्षा के पहलू से गांव के विषय में एक विचित्र बात यह है कि गांव में शुरुआत से प्राथमिक विद्यालय तो था परन्तु उच्च व माध्यमिक विद्यालय नहीं था। इस गांव के बच्चे लगभग 12 किलोमीटर पैदल चलकर पिपली इंटर कॉलेज में आगे की शिक्षा– दीक्षा पूरी करते थे। माध्यमिक विद्यालय गांव से बारह किलोमीटर दूर होने के कारण इस गांव के बच्चे उच्च शिक्षा की दौड़ में पिछड़ जाते थे। उसमें खासकर बालिकाएं तो अपनी आगे की शिक्षा पूरी ही नहीं कर पाती थी। 2002 में डी.पी.ई.पी के तहत गांव में उच्च प्राथमिक विद्यालय खुला।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फोल्ड, अपने नाम के भीतर ही अपना अर्थ छिपाए हुए है। तीन गांव के बीच और चारों ओर से घिरी पहाड़ियों के बीच मानो 'फोल्ड' करके एक योजना के तहत बसाया गया हो। इन पहाड़ी वादियों से गुजरते हुए विद्यालय के प्रांगण में पहुंचते ही मन स्वतः आनंदित हो उठता है। विद्यालय के प्रांगण में हंसते–खेलते बालक बालिकाओं का उत्साह मन में उमंग भर देता है। जैसे

एकांत में कहीं पक्षी चहचहा रहे हों। दिन की शुरुआत के साथ विद्यालय में प्रातःकालीन सभा प्रारम्भ होती है जिसमें विद्यालय के बच्चे पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने हाथ में माइक लिए प्रार्थना में होने वाली गतिविधियों को संचालित करते हैं। शिक्षकों द्वारा विद्यालय के बच्चों को तीन समूहों गंगा, यमुना, बद्री में विभाजित किया गया है और प्रत्येक समूह सप्ताहवार प्रार्थना सभा की सभी गतिविधियों को संचालित करता है। इस विद्यालय में अन्य विद्यालयों की भांति गतिविधियां तो सामान्य ही होती हैं परन्तु बच्चे इसे जिस उत्कृष्टता और लयात्मकता के साथ करते हैं वह अपने–आप ही बहुत मजेदार अदभुत प्रतीत होती है। ईश–वन्दना, समूह–गान और प्रतिज्ञा एक दिन अंग्रेजी में और एक दिन हिंदी में होती है। साथ ही बच्चे राष्ट्रीय–गान को सही सुर ताल, लय और शुद्ध उच्चारण के साथ बोल सकें, इसके लिए संगीत का सहारा लिया जाता है। इसके बाद प्रत्येक बच्चा अंग्रेजी में अपना नाम और कक्षा बताकर सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछता है। बच्चों के अंग्रेजी में बोलने वाले प्रयास के पीछे आशय यह है कि विद्यालय में अंग्रेजी का माहौल बने और बच्चे सहजता के साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने लगे। बच्चे जब अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषा में सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछते हैं तो यह देख कर सुखद आश्चर्य होता है कि विभिन्न विषयों के बहुरंगी प्रश्नों की बौछार से बच्चे बेहद सहजता से खेल रहे हैं। सामान्य ज्ञान के जो प्रश्न पूछे जाते है वह बच्चे स्वयं खोजकर लाते हैं ऐसा नहीं है कि शिक्षकों द्वारा दस–बारह प्रश्न लिखवा दिए गए हों और बच्चे रोजाना उन्हीं प्रश्नों को दोहराते हों। प्रत्येक दिन नया प्रश्न होता है और पूछे गये प्रश्नों का स्तर बच्चों के पाठयक्रम से ही नहीं बल्कि देश, दुनिया, विज्ञान, गणित, भाषा, खेल– जगत से सम्बंधित भी होते हैं।

विद्यालय में प्रार्थना सभा के बाद शिक्षण कार्य शुरू होता है। शिक्षकों ने जिस समझदारी से आपस में विषय कक्षा के अनुसार बांट रखे हैं, वह भी अपने–आप में एक मिसाल ही है। प्रधानाध्यापक श्री महिपाल सिंह मटूड़ा जी को विद्यालय के सभी प्रबन्धकीय प्रशासनिक कार्यों सहित कक्षा छः, सात और आठ के बच्चों को अंग्रेजी व सामान्य विज्ञान विषय पढ़ाते हैं। दूसरी शिक्षिका श्रीमती उर्मिला सेमल्टी के हिस्से में हिंदी व संस्कृत विषय है। तीसरे शिक्षक अरविन्द थपलियाल जी बच्चों को विज्ञान व गणित विषय सिखाते हैं। साथ ही जो बच्चे अपेक्षित शैक्षिक स्तर से नीचे हैं शिक्षक उन बच्चों पर विशेष ध्यान देते हैं। शिक्षकों का मानना है कि बच्चों में विषय की अवधारणाओं को समझने और सीखने की नींव शुरुआती दौर में ही पड़ती है और हम यह नहीं चाहते कि हमारी व्यस्तताओं का असर बच्चों की शिक्षा पर पड़े। आखिर बुनियाद मजबूत होगी तभी तो एक मजबूत इमारत बनेगी। शिक्षकों के इस एक छोटे से प्रतीत होने वाले आपसी सहमति के निर्णय में गहरी बात छिपी है।

कक्षा छह, सात और आठ के बच्चों को मिलाकर तीन समूह बनाए गये हैं। पहले समूह में वैसे बच्चे हैं जिन्हें गणित की आधारभूत संक्रियाओं जैसे– गिनती, जोड़, गुणा तथा हिंदी में मात्राओं को पहचानने और वाक्य संरचना व धारा प्रवाह से पढ़ने में दिक्कत आती है। ऐसे बच्चों की संख्या विद्यालय में कम ही है। दूसरे समूह में उन बच्चों के साथ कार्य किया जाता है जो हिंदी व सामान्य ज्ञान में लिखे हुए और पद्य को पढ़ तो लेते हैं लेकिन उस पर अपनी समझ नहीं बना पाते है और तीसरा समूह उन बच्चों का है जो कक्षावार विषय की दक्षताओं को समझते हुए आगे बढ़ रहे हैं। इन समूहों के निर्माण के क्रम में कक्षा की कोई बाध्यता नहीं दिखती है। शिक्षक सभी बच्चों को एक साथ लेकर आगे चलते हैं। उर्मिला जी द्वारा भाषा विषय पढ़ाते समय कक्षा में विशेष ध्यान दिया जाता है। उनका पाठ पढ़ाने का अपना ही तरीका है। वह किसी भी विषयवस्तु या पाठ की शुरुआत सामान्य बातचीत से ही करती है। इसके लिए वह कक्षा में प्रयोग हो रहे उदाहरण भी बच्चों के परिवेश से ही तलाश करती हैं। जिससे कक्षा में सीखने का जीवंत वातावरण तो बनता ही है, बच्चे भी बहुत सहज महसूस करते हैं। उनका उद्देश्य केवल पाठयक्रम पूरा करना नहीं रहता बल्कि उनका ध्यान इस

महीपाल सिंह मटूड़ा

उर्मिल सेमल्टी

अरविन्द थपलियाल

पर अधिक रहता है कि बच्चे पढ़ाए जाने वाले पाठ को कितना अच्छे ढंग से समझ रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप उनकी कक्षा में शिक्षार्थी बिना किसी झिझक के खड़े होकर प्रश्न करते हैं। यह दृश्य शिक्षिका और बच्चों के मैत्रीपूर्ण संबंधों को तो अभिव्यक्त करता ही है साथ ही बच्चों की विभिन्न अवधारणाओं के बारे में सीखने की जिज्ञासु प्रवृति को भी दर्शाता है।

विद्यालय में भाषा शिक्षण के साथ ही अन्य विषय गणित, विज्ञान, सामान्य ज्ञान और अंग्रेजी शिक्षण के लिए भी विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। मटूड़ा जी इस बात को स्वीकार करते हैं कि अंग्रेजी शिक्षण में उनका अपना कम ज्ञान बाधक बनता है लेकिन उन्होंने प्रयास करना नहीं छोड़ा है। उनके इस प्रयास का ही फल है कि बच्चे जितने सुंदर ढंग से हिन्दी में प्रातःकालीन सभा में गतिविधियों का वाचन करते हैं, उतने ही सहजता और आत्मविश्वास के साथ अंग्रेजी में भी करते हैं। वह बच्चों को अंग्रेजी सिखाने में बहुभाषिकता का प्रयोग करते हैं। वे स्वयं अंग्रेजी की कक्षा में ज्यादा से ज्यादा अंग्रेजी भाषा में ही बोलते हैं जिससे प्रभावित होकर बच्चे भी अपनी गलतियों पर संकोच किये बिना बेझिझक अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग करते हैं। उनका मानना है कि जब तक हम खुद इस प्रकार के प्रयास नहीं करेंगे, तब तक बच्चों को कैसे सीखने के लिए कैसे प्रेरित कर सकते हैं? उनका यह विश्वास और अथक प्रयास ही है कि विद्यालय में सभी कक्षा के बच्चे अपनी अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तके ठीक ढंग से पढ़ लेते हैं।

सभी बच्चों को गणित और विज्ञान की बुनियादी अवधारणाओं का स्पष्ट होना अति आवश्यक है तभी बच्चों का आधार मजबूत होगा और उसके उपरांत ही वे आगे आने वाली कक्षाओं के जटिल प्रश्नों को सरलता से हल कर पाएंगे। अरविन्द जी उपरोक्त दृष्टिकोण का विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। वे स्वयं को विषय का महारथी तो नहीं मानते लेकिन प्रयास करते रहते हैं कि समय के साथ–साथ कुछ नया सीखते–सिखाते रहें। कुछ नया सीखने की उनकी ललक विद्यालय और बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है। सीखने के इस क्रम में वह खुद को नहीं आ रही चीजों को साथियों व मित्रों से पूछने में हिचकते और शरमाते नहीं है। उन्होंने बताया कि उनके द्वारा गणित में अगर कोई अवधारणा या

प्रश्न बच्चों को समझने में दिक्कत आती है तो वह पुनः अपने द्वारा सिखाई गयी पद्धति के विषय में विश्लेषण करते हैं और उसमें सुधार करते हैं। वह बच्चों को सिखाते समय एक शिक्षक की तरह न सोचकर बच्चों की तरह ही सोचते हैं जिसकी झलक उनकी कक्षा में दिखाई देती है। वह बच्चों के बीच गोल घेरे में बैठकर ही शिक्षण कार्य करते हैं और पूरी तल्लीनता के साथ बच्चों को सिखाने में डूब जाते हैं। वह इस बात का विशेष ध्यान रखते हैं कि प्रत्येक बच्चे की सीखने की क्षमता और तरीका अलग है इसीलिए वे अपनी कक्षा में एक ही प्रश्न को विभिन्न प्रकार से कराते हैं जब तक कि सभी बच्चों को समझ में नहीं आ जाए। इसी प्रकार विज्ञान विषय को पढ़ाते समय यह विशेष ध्यान रखते है कि बच्चों को जितना हो सके व्यवहारिक रूप से विज्ञान की अवधारणाओं से अवगत कराया जाए। वह विद्यालय परिवेश में उपलब्ध सहायक शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल करके बच्चों को विज्ञान विषय की जटिल अवधारणाओं को प्रयोग कराते हुए बच्चों को समझाते हैं जिन्हें बच्चे सरलता से समझ लेते हैं और वह खुद करने लगते हैं। इसी का परिणाम है कि उनके बच्चे गणित व विज्ञान की जटिल से जटिल संक्रियाओं को भी सरलता से कर लेते हैं। वह बताते हैं कि इस कामयाबी के पीछे उनके दो मुख्य सिद्धान्त हैं– पहला यह कि जब तक बच्चों को कोई भी अवधारणा या विषय ठीक ढंग से स्पष्ट ना हो जाये तब तक आगे न बढ़ा जाये और दूसरा यह कि बच्चों को अभ्यास के लिए अधिक से अधिक

अवसर दिये जाए।

बच्चों के सीखने–सिखाने, पढ़ने–पढ़ाने के क्रम में यह भी आवश्यक है कि समय–समय पर देखा जाय कि बच्चे कितना समझ व सीख पा रहे हैं। जब इस विषय पर विद्यालय के शिक्षकों से बातचीत हुई उन्होंने बताया कि छमाही और वार्षिक परीक्षाएं जो विभाग की ओर से निर्देशित हैं, वो तो निर्देशानुसार ही होती हैं लेकिन उसके अतिरिक्त हम कक्षा में विभिन्न प्रकार से बच्चों का मूल्यांकन करते रहते हैं और जब तक सबसे कमजोर बच्चे को भी पढ़ाया गया विषय समझ न आ जाए आगे नहीं बढ़ते हैं। कक्षाओं में मूल्यांकन पाठ पढ़ाने के साथ–साथ ही चलता रहता है। हिन्दी में पाठ पढ़ाने के बाद तो अंग्रेजी में प्रत्येक पैराग्राफ पढ़ाने के बाद ही यह सुनिश्चित करते चलते हैं कि सभी बच्चे ठीक से समझ रहे हैं या नहीं। इसी प्रकार गणित की अवधारणाओं पर कार्य के दौरान भी हम बच्चों को कितना समझा पाये, इसका आकलन करते रहते हैं। अन्य विषयों के साथ भी यही प्रक्रिया चलती है।

बच्चों का शैक्षणिक पक्ष मजबूत हो और सभी विषयों में अधिक–से–अधिक समझ विकसित हो इसके लिए बच्चों को पढ़ने–लिखने और अभ्यास के अधिक–से–अधिक अवसर देने होंगे। यहां के शिक्षक इस तथ्य से भली–भांति अवगत हैं। विद्यालय में पुस्तकालय की सहायक पुस्तिकाएँ पाठय–पुस्तकों को और समृद्ध करती हैं तथा बच्चों की सीख को स्थायी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसीलिए इन्होंने विद्यालय का पुस्तकालय बच्चों को ही सौंप रखा है। बच्चे अपनी रुचि अनुसार पुस्तक, स्वयं रजिस्टर में अपने नाम लिखकर ले जाते हैं। शिक्षक इस विषय में कोई अवरोध नहीं बनते हैं और ना ही उन्हें यह डर होता है कहीं बच्चे किताबें फाड़ न दें या किताब वापस न करें। उनका मानना है कि जो चीज बच्चों के लिए है उसे बच्चों के पास ही रहने दिया जाए, बजाय उसके कि तालों में रखा जाए। बच्चों को स्वयं जिम्मेदारी देने से उनके अंदर अनुशासन उत्पन्न होता है जिसे किसी अन्य तीसरे व्यक्ति को सिखाने की जरूरत नहीं होती है। वह गलत सही का एहसास स्वयं कर पातें हैं जिसके लिए जरूरी है कि हमें बच्चों पर विश्वास करना होगा।

शैक्षणिक पक्ष के विकास के साथ–साथ बच्चों का सर्वांगीण विकास होना भी बहुत जरूरी है। विद्यालय के तीनों शिक्षक यह मत रखते हैं और कोशिश करते हैं कि बच्चों को खेल खेलने, सांस्कृतिक कार्यक्रम, चित्रकला आदि गतिविधियों को करने का पूरा अवसर मिले। इसके लिए उन्होंने सर्वप्रथम यह प्रयास किया, ब्लॉक की उपखंड शिक्षा अधिकारी श्रीमती हर्षा रावत से विद्यालय की धनराशि पर स्वीकृति ली और इस धनराशि से विद्यालय में बच्चों के लिए माइक और ड्रम खरीदे। इसके बाद सभी बच्चों को उसका प्रयोग करना सिखाया गया। इसका उद्देश्य था कि बच्चे बिना झिझक के आगे आकर अपनी बात कहना सीखें। साथ ही इसी वर्ष 15 अगस्त पर विद्यालय में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें तीनों गांवों के लोगों को बुलाया गया और सर्व शिक्षा अभियान के जिला समन्वयक ओम बधानी जी ने भी विद्यालय पहुंचकर बच्चों का मनोबल बढ़ाया। इस कार्यक्रम के लिए बच्चों ने पढ़ाई के साथ–साथ लगभग एक माह तैयारी भी की। जिसके परिणाम स्वरूप बच्चों ने बेहतरीन प्रस्तुति दी। जिससे गांव के लोग आश्चर्य चकित हुए कि बच्चे इतना अच्छा प्रदर्शन भी कर सकते हैं। इस पूरे भव्य आयोजन के लिए टेंट आदि की व्यवस्था विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों द्वारा ही की गयी। विद्यालय के तीनों शिक्षकों का हौसला इतना बुलंद और मजबूत है कि उन्होंने संकुल, ब्लॉक व जिले स्तर पर होने

वाले कार्यक्रमों के लिए बच्चों को तैयार किया और प्रतिभाग करवाया। इसके परिणाम स्वरूप राज्य स्तर के खेलों में कक्षा आठ के एक छात्र ने ऊंची कूद और दौड़ में दूसरा स्थान प्राप्त किया। विद्यालय के सभी शिक्षकगण इस सफलता के लिए अपने समुदाय और अधिकारियों के सहयोग हेतु आभार प्रकट करते हैं कि जब उन्होंने हमारी मदद की है तो फिर हम अपने कर्तव्य पथ से क्यों हटें?

विद्यालय में शिक्षकों का बच्चों के प्रति अगाध स्नेह और अपनी जिम्मेदारियों के प्रति इनकी सजगता ही है कि विद्यालय के तीनों शिक्षक विद्यालय समय पर पहुंचते हैं और बिना कारण अवकाश पर भी नहीं जाते है। सभी शिक्षकों की इस विषय में समान राय है कि यदि हममें से एक भी लंबे समय तक विद्यालय नहीं आया तो दूसरे पर कार्यभार बहुत बढ़ जाएगा और सबसे महत्वपूर्ण यह कि बच्चों की पढ़ाई पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ेगा। हम जितना प्रयास करके विद्यालय को यहां तक लेकर आ पाए हैं अनावश्यक अवकाश या ज्यादा अवकाश लेने पर, वह सब व्यर्थ हो जाएगा।

विद्यालय में बच्चों और शिक्षकों के आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध को देखकर यह सहजता से अनुमान लगाया जा सकता है कि यहां के शिक्षकों को बच्चों की और बच्चों को अपने शिक्षकों की आदत–सी है। विद्यालय के तीनों शिक्षक स्पष्ट रूप से इस बात को स्वीकार करते हैं कि बच्चों को प्यार और बातचीत करके जितना अच्छे से समझाया और सिखाया जा सकता है उतना भय और डंडे के जोर से नहीं। उससे बच्चों में केवल अशांति उत्पन्न होती है एवं उनका व्यवहार भी अशांत भी होने लगता है। इसका सीधा प्रभाव बच्चों के सीखने की गति पर पड़ता है। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों को सकारात्मक रूप से बात करके उन्हें कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए।

इस विद्यालय के शिक्षक केवल अपने विद्यालय व बच्चों के प्रति शैक्षणिक पक्ष के लिए ही नहीं बल्कि भौतिक पक्ष के लिए स्वयं को जिम्मेदार समझते हैं। जिसका सुंदर उदाहरण इस विद्यालय में देखने को मिल सकता है। विद्यालय में शौचालयों की दशा इतनी खराब थी कि उसका उपयोग न के बराबर ही था। जिससे विद्यालय में बालकों और बालिकाओं को शौच के लिए काफी दिक्कत होती थी। तब

शिक्षकों ने गांव और SMC के सदस्यों के साथ मिलकर प्रस्ताव बनाया और शिक्षा विभाग को यह प्रस्ताव दिया गया। इसके बाद एक माह के भीतर विद्यालय में बालक व बालिकाओं के लिए अलग–अलग शौचालय बनवाकर ही दम लिया। शिक्षक यह बात समुदाय को स्पष्ट तौर पर कहते हैं कि गांव में बना यह विद्यालय और इसकी संपत्ति गांव की है परन्तु इसमें पढ़ने वाले बच्चे हमारे हैं। शायद शिक्षकों की इस संवेदनशीलता ने ही गांव वालों के मन में इनके लिए अधिक आदर भर दिया है। अब समुदाय के लोग स्वयं विद्यालय से इतना ताल्लुक रखते हैं कि वह बिना किसी औपचारिकता के शिक्षकों, बच्चों और विद्यालय से जुडे मुद्दे पर बात करने स्वयं ही विद्यालय आते हैं। विद्यालय से जुड़ी किसी समस्या का मिलकर समाधान करने का प्रयास करते हैं। इसका एक उदाहरण यह भी देखा जा सकता है कि यहां सर्दियों के मौसम में धूप बहुत जल्दी चली जाती है और विद्यालय में बच्चों को बैठने के लिए फर्नीचर नहीं है। फर्श बहुत ठंडा हो जाता है और बच्चे इस कड़कड़ाती ठण्ड में भी दरी पर ठिठुरते रहते हैं। शिक्षकों ने बच्चों के बैठने के लिए फर्नीचर बनवाने का प्रस्ताव समुदाय के समक्ष रखा। जिसका परिणाम यह देखने को मिला कि समुदाय के लोगों और विद्यालय ने मिलकर बच्चों के लकड़ी के फर्नीचर बनवाने की ठान ली है।

विद्यालय के गांव के बीच में होने के कारण विद्यालय की

अपनी कई समस्याएं भी हैं चारों ओर से खुला होने के कारण पालतू जानवर विद्यालय के अंदर आ जाते हैं। इससे परिसर गंदा तो होता ही है, साथ ही पौधों व फूलों को भी नुकसान पहुंचाते हैं। शिक्षकों द्वारा अपने विद्यालय की चारदीवारी को बनवाने के लिए गांव की पंचायत में और विभाग में भी प्रस्ताव बनाकर दिया गया है। इस पर उन्हें आश्वासन भी मिला है कि जल्द ही विद्यालय की दीवार बनयी जाएगी।

यह विद्यालय में कार्यरत तीनों शिक्षक की दृढ़ इच्छाशक्ति और इनकी मेहनत ही है जिसके कारण हर ओर इनका सम्मान होता है। चाहे वह विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य हों, गांव वासी हों, अधिकारी हों अथवा अन्य शिक्षक साथी ही क्यों ना हो। विद्यालय के एसएमसी अध्यक्ष भी इस बात को प्रतिपादित करते दिखाई देते हैं कि विद्यालय के तीनों शिक्षक बेहद मेहनती और कर्मठ हैं और आज उन्हीं की वजह से विद्यालय इतना अच्छा चल रहा है। ना केवल विद्यालय से आंतरिक रूप से जुड़े लोग बल्कि बाहर के लोगों की भी विद्यालय और इन शिक्षकों के बारे में ऐसी ही राय है।

विद्यालय में 69 बच्चों का नामांकन और तीन शिक्षक विभागीय कार्यों के अतिरिक्त शैक्षणिक कार्यों में इतना कुछ कैसे कर पा रहे हैं? जब इस तरह के प्रश्न जेहन में कुलबुलाते हैं तो यहां के शिक्षकों के मुख का तेज और आत्मविश्वास गिजुभाई भाई बधेका के दिवास्वप्न की याद दिलाता है, जो उनके विश्वास और जिद को सामने लायी कि शिक्षा में बदलाव संभव है। किन्तु उसके लिए अपनी मान्यताओं और विचारों को चुनौती देनी होगी, और पूरी निष्ठा के साथ स्वयं को समर्पित करना होगा। इस सन्दर्भ में अगर इस विद्यालय के समस्त वातावरण और शिक्षकों द्वारा किये गये प्रयासों को देखें, तो मन में उठ रहे सभी प्रश्नों के उत्तर स्वयं मिलते हुए प्रतीत होते हैं।

(सहयोग व फोटो : प्रवीन उनियाल)

सौर मण्डल

आसमान में इतने तारे,
टिमटिम करते प्यारे-प्यारे।
उन सब में है एक बड़ा तारा,
है वो सूरज हमारा प्यारा।
उसके है कुल बच्चे आठ,
जिनको कहते ग्रह हम आठ।
इसमें बुद्ध है सबसे पास,
सूरज जी का सबसे खास।
दूसरा ग्रह है शुक्र हमारा,
धरती का है पड़ोसी प्यारा।
तीसरी अपनी धरती माता,
चौथा नम्बर मंगल का आता।
पांच नम्बर पर वृहस्पति खड़ा है,
आठ ग्रहों में सबसे बड़ा है।
शनि ग्रह है छठे नम्बर पर,
धुएं के छल्ले फैले उसपर
सात नम्बरी अरूण ग्रह है,
आठवां भाई वरूण ग्रह है।
सूरज देव का यह परिवार,
सौर मण्डल है इसका नाम।

– श्रीमती निर्मला वर्मा
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, बिग्सी, नौगांव

फोटो : संजीव बिजल्वाण